



मधुबन

ओम् शान्ति

अंक 399

अक्टूबर 2025



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति बापदादा व दीदियों की शुभ प्रेरणाये

(याद पत्र 24-9-2025)

“व्यर्थ से मुक्त रह मनमनाभव के मन्त्र का स्वरूप बनो तब मन्सा सेवा कर सकेंगे”

परमप्रिय अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा शुभ संकल्पों का स्टॉक जमा कर, शुभ भावनाओं से सम्पन्न रहने वाले, अपनी सुखमय स्थिति और सुख की वृत्तियों द्वारा मन्सा सेवा के अनुभवी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार के साथ दीपावली के पावन पर्व की सबको बहुत-बहुत शुभ बधाईयां।

बाद समाचार - यह अक्टूबर मास त्योहारों का मास है, संगमयुग के कुछ यादगार त्योहार इस मास हम सब खूब धूमधाम से मनायेंगे। विकारों पर सम्पूर्ण विजय का यादगार विजयदशमी (दशहरा), फिर नम्बरवार दीपावली के यादगार त्योहार, धनतेरस, गोवर्धन पूजा, छोटी दीवाली, बड़ी दीवाली, नया वर्ष, भैया दूज आदि आदि.. हम सभी इन सबके आध्यात्मिक अर्थ को जानते और खूब उमंग-उत्साह से एक दो को बधाईयां देते, सबका मुख मीठा कराते हैं। मीठे दीपराज बाबा ने ज्ञान घृत डालकर हम सबका आत्म-दीप जगाया है। हम जगे हुए दीपक अनेक दीपकों की ज्योति जगाकर दीपमाला मना रहे हैं। पुराने चौपड़े बंद कर नया चौपड़ा शुरू करते हैं। अन्दर के कोने-कोने को स्वच्छ साफ कर श्रीलक्ष्मी का आह्वान करते हैं। ऐसे अनेक रहस्यों से भरे हुए संगम के यादगार पर्व की आप सबको कोटि-कोटि बधाई हो।

अभी समय अनुसार बाबा कहते बच्चे, सर्व आत्माओं की ज्योति जगाने के लिए स्वयं को शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति और श्रेष्ठ वायब्रेशन से सम्पन्न बनाओ। लाइट माइट हाउस बनो। अपनी सुखमय, सुख स्वरूप स्थिति द्वारा मन्सा सेवा के अनुभवी बनो। मन, बुद्धि को व्यर्थ सोचने से मुक्त करो। ‘मनमनाभव’ के मन्त्र का सहज स्वरूप बनो। आपके मन्सा शक्ति का दर्पण है - बोल और कर्म। जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ है उसकी वाचा और कर्मणा स्वतः ही शक्तिशाली शुद्ध और शुभ-भावना वाली होगी। तो अभी अभ्यास की प्रयोगशाला में बैठ, योग की शक्तियों का प्रयोग करना है। अभी तक ज्ञान के, गुणों के, शक्तियों के सागर में ऊपर-ऊपर की लहरों में लहराया लेकिन अब सागर के तले में जाकर अनेक विचित्र अनुभव के रत्न प्राप्त करने हैं।

योग की शक्ति जमा करने के लिए बाबा कहते बच्चे, कर्म और योग का बैलेंस रखो। कर्म करते योग की पॉवरफुल स्टेज रहे। जैसे सेवा के लिए इन्वेन्शन करते हो वैसे योग के विशेष अनुभवों के अभ्यास के लिए समय निकालो और नवीनता लाकरके सबके आगे एक्जाम्पुल बनो क्योंकि वर्तमान समय के प्रमाण सर्व आत्मायें प्रत्यक्षफल अर्थात् प्रैक्टिकल प्रूफ देखने चाहती हैं। आपके पास जो शान्ति की शक्ति है इसका प्रयोग पहले स्व के प्रति, तन की व्याधि के ऊपर करके देखो, इससे कर्मबन्धन का रूप, मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जायेगा। कर्मभोग, कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा।

बोलो, ऐसी प्रयोगशाला में बैठ मन्सा शुभ भावनाओं का प्रयोग करते सफलतामूर्त बने हो ना! अब विशेष समय निकाल अपनी मन्सा सूक्ष्म शक्तियों का प्रयोग करना है। अच्छा - आप सभी स्वयं की स्थिति को सम्पन्न बनाने तथा परमात्म प्रत्यक्षता के कार्य को सम्पन्न करने के लिए तीव्र उड़ान भर रहे होंगे।

सभी को बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न मधुर याद... ओम् शान्ति।

ईश्वरीय सेवा में,
बी के मोहिनी
मुख्य प्रशासिका





ये अव्यक्त इशारे



स्वयं और सर्व के प्रति मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

1) जैसे बापदादा को रहम आता है, ऐसे आप बच्चे भी मास्टर रहमदिल बन अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दो। जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है, तत्वों सहित सबको पावन बनाना है तो मन्सा द्वारा तीव्रगति से सेवा करो।

2) कोई भी यह नहीं कह सकता कि हमको तो सेवा का चान्स नहीं है। कोई बोल नहीं सकते तो मन्सा वायुमण्डल से सुख की वृत्ति, सुखमय स्थिति से सेवा करो। तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे भी सहयोगी बनो, सिर्फ मन्सा में शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो, शुभ भावनाओं से सम्पन्न बनो।

3) अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो। इसकी विधि है - लाइट हाउस, माइट हाउस बनना। इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्रालम्भ नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है।

4) मन्सा सेवा के लिए मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए। 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए, जिन श्रेष्ठ आत्माओं की मन्सा अर्थात् संकल्प श्रेष्ठ और शक्तिशाली है, शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हैं वह मन्सा द्वारा शक्तियों का दान दे सकते हैं।

5) मन्सा शक्ति का दर्पण है - बोल और कर्म। चाहे अज्ञानी आत्मायें, चाहे ज्ञानी आत्मायें - दोनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में बोल और कर्म शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हों। जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ होगी उसकी वाचा और कर्मणा स्वतः ही शक्तिशाली शुद्ध होगी, शुभ-भावना वाली होगी। मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे।

6) जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करो तो कभी अपसेट नहीं होंगे। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा। मन सदा सेट अर्थात् एकाग्र है तो स्वतः अच्छे वायब्रेशन फैलते हैं। सेवा होती है।

7) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वतः शुभभावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वतः होती रहे।

8) जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ-साथ और नेचुरल हो। वाणी के साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी।

9) जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे मन्सा शक्तियों द्वारा सेवा करने से बहुत थोड़े समय में सफलता ज्यादा मिलेगी। अभी जो अपने प्रति कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है - अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी।

10) जब मन्सा में सदा शुभ भावना वा शुभ दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिजी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वतः ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादूमन्त्र हो जायेगा।

11) अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी। इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालम्भ प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी। इस समय की श्रेष्ठ प्रालम्भ है - "सदा स्वयं सर्व प्राप्ति से सम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना"।

12) समय प्रमाण अब मन्सा और वाचा की इकट्टी सेवा करो। लेकिन वाचा सेवा सहज है, मन्सा में अटेंशन देने की बात है इसलिए सर्व आत्माओं के प्रति मन्सा में शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प हों। बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता हो तो सेवा में सहज सफलता मिलती रहेगी।

13) जितना स्वयं को मन्सा सेवा में बिजी रखेंगे उतना सहज मायाजीत बन जायेंगे। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं बनो लेकिन औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने की सेवा करो। भावना और ज्ञान, स्नेह और योग दोनों का बैलेन्स हो। कल्याणकारी तो बने हो अब बेहद विश्व कल्याणकारी बनो।

14) मन्सा-सेवा बेहद की सेवा है। जितना आप मन्सा से, वाणी से स्वयं सैम्पल बनेंगे, तो सैम्पल को देख कर स्वतः ही आकर्षित होंगे। सिर्फ दृढ़ संकल्प रखो तो सहज सेवा होती रहेगी। अगर वाणी के लिए समय नहीं है तो वृत्ति से, मन्सा सेवा से परिवर्तन करने का समय तो है ना। अब सेवा के सिवाए समय गँवाना नहीं है। निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी बनो। यदि मन्सा-सेवा करना नहीं आता तो अपने सम्पर्क से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हो।

15) कोई भी स्थूल कार्य करते हुए मन्सा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। जैसे कोई बिजनेसमेन है तो स्वप्न में भी अपना बिजनेस देखता है, ऐसे आपका काम है – विश्व-कल्याण करना। यही आपका आक्यूपेशन है, इस आक्यूपेशन को स्मृति में रख सदा सेवा में बिजी रहो। यदि सेवा का फल मिल जाये तो मायाजीत सहज बन जायेंगे इसलिए जब भी बुद्धि को फुर्सत मिले तो सेवा में जुट जाओ।

16) जैसे साइंस प्रयोग में आती है तो समझते हैं कि साइंस अच्छा काम करती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करो, इसके लिए एकाग्रता का अभ्यास बढ़ाओ। एकाग्रता का मूल आधार है - मन की कन्ट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है, इसके लिए एकान्तवासी बनो।

17) आप अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने संकल्पों को सिद्ध कर सकते हो। वह रिद्धि सिद्धि है अल्पकाल, लेकिन याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि है अविनाशी। वह रिद्धि सिद्धि यूज करते हैं और आप याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि प्राप्त करो।

18) अभ्यास की प्रयोगशाला में बैठ, योग का प्रयोग करो तो एक बाप का सहारा और माया के अनेक प्रकार के विघ्नों का किनारा अनुभव करेंगे। अभी ज्ञान के सागर, गुणों के सागर, शक्तियों के सागर में ऊपर-ऊपर की लहरों में लहराते हो इसलिए अल्पकाल की रिफ्रेशमेंट अनुभव करते हो। लेकिन अब सागर के तले में जाओ तो अनेक प्रकार के विचित्र अनुभव कर रत्न प्राप्त करेंगे।

19) योग की शक्ति जमा करने के लिए कर्म और योग का बैलेन्स और बढ़ाओ। कर्म करते योग की पॉवरफुल स्टेज रहे –

इसका अभ्यास बढ़ाओ। जैसे सेवा के लिए इन्वेन्शन करते वैसे इन विशेष अनुभवों के अभ्यास के लिए समय निकालो और नवीनता लाकरके सबके आगे एक्जाम्पुल बनो।

20) वर्तमान समय के प्रमाण सर्व आत्मायें प्रत्यक्षफल अर्थात् प्रैक्टिकल प्रूफ देखने चाहती हैं। तो तन, मन, कर्म और सम्पर्क-सम्बन्ध में साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करके देखो। शान्ति की शक्ति से आपका संकल्प वायरलेस से भी तेज किसी भी आत्मा प्रति पहुंच सकता है। इस शक्ति का विशेष यंत्र है 'शुभ संकल्प' इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहे वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो।

21) शान्ति की शक्ति का प्रयोग पहले स्व के प्रति, तन की व्याधि के ऊपर करके देखो। इस शक्ति द्वारा कर्मबन्धन का रूप, मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जायेगा। यह कर्मभोग, कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ – यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब-किताब का दृश्य भी देखते रहेंगे।

22) योग का प्रयोग अर्थात् अपने शुद्ध संकल्पों का प्रयोग तन पर, मन पर, संस्कारों पर अनुभव करते आगे बढ़ते जाओ, इसमें एक दो को नहीं देखो। यह क्या करते, यह नहीं करते, पुराने करते वा नहीं करते, यह नहीं देखो। पहले मैं इस अनुभव में आगे आ जाऊँ क्योंकि यह अपने आन्तरिक पुरुषार्थ की बात है। जब ऐसे व्यक्तिगत रूप में इसी प्रयोग में लग जायेंगे, वृद्धि को पाते रहेंगे तब एक एक के शान्ति की शक्ति का संगठित रूप में विश्व के सामने प्रभाव पड़ेगा।

23) जैसे वाणी की प्रैक्टिस करते-करते वाणी के शक्तिशाली हो गये हो, ऐसे शान्ति की शक्ति के भी अभ्यासी बनते जाओ। आगे चल वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति के साधन आवश्यक होंगे क्योंकि जितना जो महान् शक्तिशाली होता है वह अति सूक्ष्म होता है। तो वाणी से शुद्ध-संकल्प सूक्ष्म हैं इसलिए सूक्ष्म का प्रभाव शक्तिशाली होगा।

24) जहाँ वाणी द्वारा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है तो कहते हो - यह वाणी से नहीं समझेंगे, शुभ भावना से परिवर्तन होंगे। जहाँ वाणी कार्य को सफल नहीं कर सकती, वहाँ साइलेन्स की शक्ति का साधन शुभ-संकल्प, शुभ-भावना, नयनों की भाषा द्वारा रहम और स्नेह की अनुभूति कार्य सिद्ध कर सकती है।

25) कोई भी खजाना कम खर्च करके अधिक प्राप्ति कर लेना, यही योग का प्रयोग है। मेहनत कम सफलता ज्यादा इस विधि से प्रयोग करो। जैसे समय वा संकल्प श्रेष्ठ खजाने हैं, तो संकल्प

कम से कम खर्च हों लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो, इसको कहते हैं कम खर्चा बाला नशीन। खर्च कम करो लेकिन प्राप्ति 100 गुणा हो इससे समय की वा संकल्प की जो बचत होगी, वह औरों की सेवा में लगा सकेंगे, दान पुण्य कर सकेंगे, यही योग का प्रयोग है।

26) प्रयोगी आत्मा संस्कारों के ऊपर, प्रकृति द्वारा आने वाली परिस्थितियों पर और विकारों पर सदा विजयी होगी। योगी वा प्रयोगी आत्मा के आगे ये पांच विकार रूपी सांप गले की माला अथवा खुशी में नाचने की स्टेज बन जाते हैं।

27) जैसे साइन्स की शक्ति का प्रयोग लाइट के आधार पर होता है। अगर कम्प्यूटर भी चलता है तो कम्प्यूटर माइट है लेकिन आधार लाइट है। ऐसे आपके साइलेन्स की शक्ति का भी आधार लाइट है। जब वह प्रकृति की लाइट अनेक प्रकार के प्रयोग प्रैक्टिकल में करके दिखाती है तो आपकी अविनाशी परमात्म लाइट, आत्मिक लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति लाइट, तो इससे क्या नहीं प्रयोग हो सकता!

28) जैसे कोई भी साइन्स के साधन को यूज करेंगे तो पहले चेक करेंगे कि लाइट है या नहीं है। ऐसे जब योग का, शक्तियों का, गुणों का प्रयोग करते हो तो पहले ये चेक करो कि मूल आधार आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति वा लाइट (हल्की) स्थिति

है? अगर स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्रयोग की सफलता बहुत सहज कर सकते हो।

29) पहले स्वयं पर योग के प्रयोग करके देखो। हर मास वा हर 15 दिन के लिये कोई न कोई विशेष गुण वा कोई न कोई विशेष शक्ति का स्व प्रति प्रयोग करके देखो क्योंकि संगठन में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में पेपर तो आते ही हैं, तो पहले अपने ऊपर प्रयोग करके चेक करो, कोई भी पेपर आया तो किस गुण वा शक्ति का प्रयोग करने से कितने समय में सफलता मिली? जब स्व के प्रति सफल होंगे तब औरों के प्रति भी प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वतः ही बढ़ता जायेगा।

30) योग का प्रयोग करने के लिए दृष्टि-वृत्ति में भी पवित्रता को और अण्डरलाइन करो। मूल फाउण्डेशन - अपने संकल्प को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनाओ। कोई कितना भी भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव समझता हो लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर दे। यही है योग का प्रयोग।

31) दिव्य-बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊंची चोटी की स्थिति में स्थित हो, अव्यक्त वतनवासी बन विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ। योग के प्रयोग द्वारा दुःखी-अशान्त आत्माओं को शान्ति और शक्ति की सकाश दो।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

गुल्जार दादी जी की अनमोल शिक्षायें

“बाबा मिला है उसकी निशानी - चेहरे पर खुशी, सन्तुष्टता और प्रसन्नता की झलक दिखाई देगी”

(02-01-11)

ओम् शान्ति कहते ही क्या याद आता है? (बापदादा) और जब बापदादा याद आता है तो मन में खुशी की लहरें ऑटोमेटिकली अनुभव होती हैं क्योंकि बाबा ने हमें खुशियों का खज़ाना दे दिया और बाबा अभी ऐसी खुशियाँ देता है जो आधाकल्प चलेगी, यह गैरंटी है इसलिए बाबा से मन का जिगरी प्यार हो। खुशी के लिए स्पेशल महिमा है, खुशी गई माना सब गया, तो हेल्थ भी अच्छी नहीं होगी, वेल्थ का मज़ा नहीं आयेगा। खुश नहीं है तो दवा का भी असर नहीं होगा। तब तो कहा जाता है खुशी जैसा कोई खज़ाना नहीं। ज्ञान मिलते ही खुशी हो जाती है क्योंकि कोर्स

करने के बाद बाबा मेरा हो जाता है ना। अब भगवान मेरा हो गया तो बाकी क्या चाहिए? कुछ नहीं चाहिए। तो बाबा कहता है जो अन्दर खुशी होगी वो आपके चेहरे से दिखाई देना चाहिए, चलन में फर्क पड़ेगा।

बाबा कहता है बच्चों का चेहरा गुलाब के फूल मुआफिक खिला हुआ होना चाहिए क्योंकि बाबा मिला, ज्ञान मिला तो जो हमें मिला और किसी के पास नहीं है तो हमें ज्ञान मिला तो हम खुश हैं माना यह ज्ञान का रेसपांड है। वो नहीं है तो बाकी ज्ञान क्या है? तो सुबह से देखो मेरे चेहरे में सदा के लिये वो खुशी वो

सन्तुष्टता, प्रसन्नता रहती है? हमें कौन मिला है, अतीन्द्रिय सुख मिला है, तो हमारी शक्ल अवश्य बतायेगी। हमारे अन्दर की खुशी जो है वो परमात्मा की देन है। बाबा है कौन? उनकी विशेषतायें स्मृति में लाना तो मजा आये, खुशी हो जाये। तो हम अभी साधारण नहीं हैं, दुनिया वाले हमारे चलन और चेहरे से ही समझ रहे हैं कि हमें कौन मिला है और क्या मिला है? अभी हमारा चेहरा बोले, चलन बोले। तो यह खुद ही अपने आपको चेक करके चेंज करना है। अपने चेहरे को रोज़ बाबा के ज्ञान के आइने में देखना कि सचमुच हमारा चेहरा देखके किसी को लगता है कि इन्हों को कुछ मिला है, इनको कोई प्राप्ति हुई है। फर्क तो दिखाई देना चाहिए ना, ऐसे नहीं मेरा चेहरा ही ऐसा है। तो चेहरे में रूहानी चमक हो।

हमारा बाबा लाइट है ना, तो बाबा को साथ रखने से कभी भी माया वार नहीं करेगी। माया तो सबके पास आती ही रहती है लेकिन हम बाबा के साथ हैं, तो माया हमारे सामने टिक नहीं सकती है, खुद ही माया सरेण्डर हो जायेगी। तो अकेले कभी नहीं रहना, बाबा मेरे साथ है। और बाबा के आगे माया आयेगी नहीं, तो बाबा को साथ रखना अच्छा है ना। तो कभी अकेले नहीं बनना। जैसे एक के बजाए कोई दो हो जायें तो फील होता है ना कि जैसे दिल बड़ी हो गई और बाबा साथ होगा तो कितनी दिल बड़ी हो गयी। बाबा को अलग नहीं कर दो, दिल में समा दो। बाबा साथ है तो बेपरवाह होके चलेगे क्योंकि सर्व शक्तियाँ साथ हैं ना। हमारे को क्या कोई कर सकता है, ऐसा स्मृति में रखेंगे तो फायदा है।

गुल्जार दादी जी का दूसरा क्लास

“ड्रामा के राज़ को यथार्थ समझने वाले हलचल में भी सदा अचल अडोल रहते हैं”

(31-01-11)

तीन बार ओम् शान्ति कहने से सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। बाप भी याद आ गया, दादा भी और तीसरा ड्रामा भी। इस ड्रामा के ज्ञान के बिना भी हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं, अचल अडोल नहीं रह सकते हैं। कभी कोई भी ऐसा विघ्न आता है, पता नहीं मेरा आगे क्या पार्ट है? मैं चल सकूँगी या नहीं चल सकूँगी...। अभी तो मैजारिटी को निश्चय हो गया है कि हम ही थे, हम ही हैं और हम ही होंगे, यह पक्का है ना। जब संगठन में रहते हैं तो कई छोटी-मोटी बातें तो आती रहेंगी, कोई भी बात आवे, माया का काम है हिलाना। लेकिन मम्मा कहती थी, माया का काम देख करके आप अपना काम क्यों भूल जाते हो? हमारा काम क्या है? हिलाना या माया को हिलाना। अभी हम सारे ड्रामा को जानते हैं, कभी भी कोई दिलशिकस्त हो तो ड्रामा को याद करे मैं थी, मैं हूँ और मैं ही बनूँगी, इसीलिए बाबा ड्रामा को भी याद दिलाता है। कोई भी हलचल आवे तो हलचल में नहीं आना लेकिन ड्रामा के राज़ को समझ करके अचल हो जाना।

हम देवता हैं, यह पक्का है ना आपको। यह भूलना नहीं कि मैं देवता की आत्मा थी, अब चक्कर लगाके फिर वही बन रहे हैं, मनुष्य से देवता। तो इस नशे में रहने से मैं आत्मा हूँ, मैं फरिश्ता हूँ और फिर देवता हूँ। जो बाबा सिखाते हैं, बीच-बीच में उसका अभ्यास करते रहो तो कभी कोई भी खिंटखिंट हमारे सामने आयेगी तो यह अभ्यास हमको हिलायेगा नहीं। अभी संस्कार का टक्कर जब होता है तो अवस्था बदल जाती है ना। देवता बनना है

तो अपने संस्कारों के ऊपर ध्यान दो। तो यह सब बातें जो हैं वो हमारी परिवर्तन होनी चाहिए। तो संस्कार परिवर्तन के ऊपर आप सबका अटेंशन है? बाबा ने कहा है फरिश्ते जैसे संस्कार, देवता जैसे संस्कार हमको धारण करने हैं, तो हमारी अवस्था सदा दिलखुश रहे और खुशी ही सबको बांटते रहें। टक्कर को भी खुशी में बदल दो, जिससे टक्कर हो उसे भी योग की किरणें दे करके बदलना है।

दादी जी के जीवन की विशेषता एक लाइन में सुनायें तो मैंने देखा कि बाबा का कहना और दादी का करना क्योंकि दादी ने बचपन से बाबा के मुख से जो निकला वो प्रैक्टिकल किया है। ड्रामा अनुसार चांस भी मिला है। समय प्रति समय जो बाबा के डायरेक्शन निकले, उस अनुसार दादी ने वह सेवा की है, यह दादी की स्पेशल विशेषता रही है। दूसरा - हर आत्मा के प्रति बहुत कल्याण की भावना रही। चाहे ब्राह्मण हो, चाहे बाहर वाला हो लेकिन हर आत्मा के लिये कल्याण की भावना रही, इसका भी कल्याण हो, सबका कल्याण हो। बाबा कहते कल्याणकारी बनो उसी अनुसार कर्म भी हों, संकल्प भी हो और प्रैक्टिकल भी हो। दादी जो भी संकल्प करती, उसको करके ही छोड़ती। तो यह दादी की विशेषता हमको करना है, बाबा ने जो आज की मुरली में कहा वो सारे दिन में करना ही है, इसको कहते हैं आगे बढ़ना और आगे बढ़ाना।

“हमारे ऊपर केवल अपने को सुधारने की जिम्मेवारी है, अपनी बुद्धि पर कोई बर्दन (बोझ) नहीं रखो”

(08-10-06)

हर बाबा का बच्चा ड्रामा में अपना यादगार खुद बनाता है। जैसे कर्म करता है, जैसे सम्बन्ध रखता है। कर्म-सम्बन्ध का कनेक्शन है, उसमें जितना दिव्यता अलौकिकता है वैसा यादगार बनता है। बाबा ने सच्चा और पक्का ब्राह्मण बनाया है। सच्चा ब्राह्मण सच्ची दिल से बाबा को राजी करेगा। बाबा जिसमें राजी फिर क्या करेगा काजी, यानि धर्मराज कुछ नहीं कर सकता। थोड़ा भी मिक्सचर होगा तो हाफ कास्ट ब्राह्मण हो जायेगा। यह टाइटिल कौन सा हो गया! अधूरा ब्राह्मण कैसा होगा। उसको इतनी खाने की परहेज नहीं होगी, सवेरे अमृतवेला ठीक नहीं होगा, क्लास में बहाना देगा। सच्चा ब्राह्मण मजाल है जो बहाना देवे।

पहले जब बाबा दृष्टि देता था तो अन्दर कम्पन होता था, समझते थे शरीर छोड़ रहे हैं। अभी यह नहीं कहते हैं, पर शरीर से न्यारे, अशरीरी हो रहे हैं। जैसे बाबा अशरीरी है, सर्व आत्माओं में एक परमात्मा ही अशरीरी है। परमपिता है, धर्म पिताओं का पिता है, वो दृष्टि देता है तो आँख खुल जाती है। आँख खुली तो बुद्धि भी बदल गयी। बुद्धि है अन्दर, मन बुद्धि संस्कार। आत्मा में मन-बुद्धि संस्कार हैं। समझते थे कि आत्मा शरीर धारण करती है पर मुझारा था कि आत्मा निर्लेप है, आत्मा ही परमात्मा है। अभी बाबा ने कितनी गहरी बात समझाई है कि आत्मा कर्म शरीर द्वारा करती है। शरीर आत्मा के बिगैर कोई कर्म नहीं कर सकता है। उसमें कर्म और सम्बन्ध का कितना हिसाब-किताब है, यह बाबा ने आकर बुद्धि दी। दृष्टि देकर ध्यान खिंचवाया अपनी तरफ, कौन आया परदेशी। तो जिसका ध्यान दिव्य दृष्टिदाता की तरफ चला गया, वो जीते जी मर गया। वो जीता है पर मरे के बराबर। दुनिया वाले भी समझते हैं ये तो जैसे मरे के बराबर है। अन्दर देह से न्यारा, स्वभाव संस्कार से भी न्यारा हो गया।

बाबा की दृष्टि से शान्तिधाम का भी अनुभव हो जाता है। खुद शान्ति का सागर है, आत्मा को इशारा करता है तुम भी वहाँ की रहने वाली हो। मेरी सन्तान हो, यहाँ तुम मेरे से बिछुड़ी हो, रावण के चम्बे में आ गयी हो। मैं उससे छुड़ाने आया हूँ। कितनी जीवन बदल गयी है, कहाँ दुनिया, कहाँ हम रात दिन का अन्तर हो गया।

जमाना बहुत खराब है, बचो और बचाओ। जो बचता है वो औरों को भी बचा सकता है। सच्चे बनकर रहो। सच्चे बच्चे की बुद्धि पावरफुल होगी माना योग अच्छा होगा। वाणी में कम बोलेंगे और कर्म से दिखाई पड़ेगा। कर्म का कनेक्शन बुद्धि के साथ है। बाबा ने हमारी बुद्धि चेन्ज कर दी है। कभी क्षत्रिय की बुद्धि हो तो साक्षी होकर देखो। शूद्र बुद्धि वाला तो बाबा के घर में आयेगा ही नहीं। अभी मन को अच्छा खाना मिलता है। पहले मन बिचारा भूखा था, शान्ति चाहिए, शान्ति चाहिए। अभी अच्छा खाना मिला तो शान्ति तो आ गयी, फिर चिन्ता काहे की करें। तो अपनी बुद्धि पर बर्दन न रखो, न किसी पर आपका बर्दन हो। हमारे ऊपर केवल अपने को सुधारने की जिम्मेवारी है। दुनिया भले पीछे माने, पर हमें बाबा की बात पहले माननी है। जिससे मेरी जीवन बदल जाये, बस और कोई इच्छा नहीं है। बदलने शुरू होती है तो निश्चय अपने में और बाबा में बैठ जाता है। निश्चय रखा, संकल्प रखा तो बाबा मदद करता है। मदद मिलने से शक्ति आ जाती है। खुशी आ गयी, सिर हल्का हो गया। तो कभी यह ख्याल न आये क्या करूँ, कैसे करूँ, यह क्षत्रिय के ख्याल हैं। यह कर, ऐसे कर वो बन गया ब्राह्मण। फिर करता है तो ऐसे नहीं लगता कि मैं करता हूँ, पर बाबा मदद करता है।

पुरानी दुनिया में रहते हो तो अपने को बचाके रखो, जो उसका असर आपके ऊपर न हो जाये, जो दुःख सहना पड़े। अपने को बिल्कुल डिटैच रखो। अटैचमेन्ट को समझना, डिटैच रहकर कितना सुखी रहते यह समझना। कुदरत का नियम है यह पांच अंगुली बराबर नहीं है। पर आदत ऐसी हो गयी है जो नैचरल को छोड़ अननैचरल बन गये हैं। काँ-काँ करके सिर खपाने वाली बात करेंगे। अरे सब अच्छा करते हैं ना। मन को धीरज सिखाना, यह हाथ हमको सिखाता है, हाथ में हाथ मिलाकर चलो।

जो प्राचीन भारत की सभ्यता है, इन्सान जाति है, परमात्मा के बच्चे हैं। सत्यता और नम्रता ने यहाँ तक पहुंचाया है। नम्रता जब तक व्यवहार में नहीं आयी है, ब्राह्मण सो फरिश्ता कैसे बनेंगे। बाबा की शक्ल हमको हमारा फ्यूचर दिखाती है। खुली आँख से बाबा को देखो तो बाबा हमारा फ्यूचर है। तुम अपने को

देख चेंज करो। बाबा अपने को देखना सिखाता है। किसके लिए भी मन में ग्लानि रखना माना अपना पद कम कर देना। अच्छा स्टूडेंट अपने पर ध्यान रखता है, मुझे सेकेण्ड थर्ड में नहीं आना है। तो साधारण ख्याल या दूसरों की कमी देखने की नेचर मुझे नीचे ले आयेगी।

जो न करने योग्य होगा, उससे भगवान मुझे बचा देता है, और जो करना होता है उसमें खटिया से भी उठके भाग जायेंगी।

ऐसे प्यारे भगवान को, भोलेनाथ भगवान को दिल से प्यार करो ना। तो गैरेन्टी है हमारे बाल को भी कोई हाथ नहीं लगा सकता। अपमान करने वाले को भी हम कुछ नहीं कहते, जो दिल में भरा है कहाँ फेंके! तो दिव्य दृष्टि दाता ने बुद्धि और दृष्टि ऐसी दी है, जिससे हम रहम से ही देखें। ऐसा हमारा रूप हो जो घर बैठे भी किसको मेरा अच्छा मीठा रूप याद आ जाये। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“विश्व कल्याण की सेवा प्रति अपनी जीवन अर्पित करना भी महान तकदीर है”

(1987)

आप सब पाण्डव पति के प्यारे पाण्डव हो जिन्होंने अपने आपको इस संगम पर एक बाबा, एक बाबा की सेवा में बलिहार किया है। इन संगम की महान घड़ियों में अथक सेवाधारी बन डबल कमाई कर रहे हो। बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त के अतिइन्द्रिय सुख का मजा इन घड़ियों में प्राप्त कर रहे हो। क्योंकि आप सभी ने अपने दिल तख्त पर एक बाबा को बिठाया है। बाबा भी कहता- मेरा दिलतख्त तुम बच्चों के लिए है। आप सबको बेहद सेवा करने का महान सौभाग्य मिला है। यह बन्धनमुक्त समर्पित जीवन भी बहुत बड़ी तकदीर है। आप देह और देह के सभी संबंधों को छोड़ बाबा की अलौकिक सेवा में अपना तन-मन-धन, जीवन सफल कर रहे हो। यह श्वास भी बाबा है तो संकल्प भी बाबा के हैं। बाबा के सिवाए इन आंखों में दूसरा कोई बसता ही नहीं। ड्रामा अनुसार संगम पर बाबा ने शिवशक्तियों को ज्ञान का कलश दे सेवाकेन्द्रों पर निमित्त रखा है। लेकिन आप सबकी यह महान तकदीर है जो आपने अपने आपको विश्व कल्याण की सेवा में अर्पित किया। ड्रामा अनुसार आपको यह महान भाग्य मिला है। उन प्रवृत्ति वालों को लौकिक बन्धनों को निभाते अलौकिक संबंध में आने का पार्ट है। हजारों में विरले ही कोई-कोई को यह लॉटरी मिलती है। आप सबको स्पेशल निमन्त्रण दे बुलाया है। इसलिए आप लोगों के भाग्य का हम क्या गुण गायें। आप डबल सेवाधारी, त्यागी तपस्वी हो।

2- बाबा ने आप सबको अपनी छत्रछाया में स्पेशल बुलाया है। विश्व रक्षक ने माया से मुक्त होने की रक्षा करने की राखी पर

बुलाया है। आप सबको राखी का निमन्त्रण मिला है। आप सब इस उत्सव को ऐसे ही मनाकर जाना जो जीवन भर उसी रक्षक की रक्षा के अन्दर सदा रहो। सदा विजय का वरदान लेने आप सब यहाँ पहुँचे हो। राखी है ही विजय का वरदान देने वाली। आप सब इस अलौकिक भट्टी में आये हो- भट्टी का अर्थ ही है- अन्तर्मुख हो जाना। आप सब यहाँ विशेष 3-4 बातों के लिए आये हो 1. आप बेहद सेवायें करके आये हो, उन सेवाओं से भी परे बाबा आप सभी को अपनी गोदी में विश्राम देगा। सेवायें तो बहुत करते, अब यहाँ आये हो तो बाबा की शीतल छाया में, यादों में खो जाना। 2. बाबा की हर मुरली में जो योग का मन्त्र आता, उसी योग की बहुत गहरी, स्वीट साइलेन्स की बहुत सूक्ष्म शक्ति की अनुभूति करना। उसी योग के चार्ट को सम्पन्न करना। खास योग की अपने में इतनी शक्ति भरकर जाना जो वह याद की शक्ति सेवा में रहते आटोमेटिकली अपनी ओर खींचती रहे। इसके लिए जो भी कोई सूक्ष्म चिंतन हो, परचिन्तन हो, दिल के अन्दर सूक्ष्म में संस्कार हो, स्वभाव हो, वृत्तियों में कोई विकल्प हो, इसी घड़ी से उसको ऐसे भूल जाओ जैसे वह मेरे थे ही नहीं। आप समझो हम संसार की न्यूज से परे, सब संकल्प विकल्पों से परे अन्तर्मुखता की गुफा में आये हैं। अन्तर्मुखी तपस्वीमूर्त बन जाना है। यही हमारी अन्त मती सो गति है। इसी की हम सबको दरकार है, यही हमारी तपस्या है, याद है जो हमें विकर्माजीत बनायेगी। इसलिए बस बीती को भूल कर इतने थोड़े दिनों में जितनी कमाई कर सको करो, 8 घण्टा तो क्या 12-16 घण्टे का

चार्ट बनाओ। इसके लिए एकदम आवाज से परे, मन्सा के संकल्पों से भी परे रहना। ऐसा समझो हम बाबा की याद के व्रत में हैं, मौन में हैं। न मुख का बोल, न मन का बोल, न आवाज सुनना न आवाज में आना। जब ऐसे अन्तर्मुखी हो जायेंगे तो चमकते हुए सितारे दिखाई देंगे। चमकती हुई मूर्त बन जायेंगे। याद की भट्टी का मजा लेने के लिए कम्पलीट मौन में रहना है, याद के व्रत में रहना है, निद्राजीत बनना है। ज्ञान के मनन चिंतन से, योग की शक्तियां भरपूर करनी है। हर कदम में शक्ति रूप बनना है। सदा अपने स्वमान की स्टेज में स्थित रहना है। ऐसा सैम्पुल इस भट्टी से बनकर जाओ जो सबको उस सैम्पुल से सबूत मिले। इस मधुबन भट्टी से अलौकिक बनकर जाना है। इसलिए भट्टी में आवाज से परे, निगाहों से परे, संकल्पों से परे, वायब्रेशन वायुमण्डल से परे वतनवासी बनकर रहना है। क्योंकि जीवन में हंसना खेलना बहलना तो होता ही रहता है। परन्तु अभी जो बाबा लास्ट स्टेज बार-बार कहता, वह है ही याद के यात्रा की। इसलिए हमें यादों में समाना है और समाकर शक्ति भर जाना है। अच्छा-

(भाईयों के प्रश्न और दादी जी के अनुभव युक्त उत्तर)

प्रश्न:- 8 घण्टे की याद के लिए पुरुषार्थ क्या है? 8 घण्टे का चार्ट कैसे बनायें?

उत्तर:- जितना-जितना हम अशरीरी स्थिति में रहते, अपनी हाइएस्ट स्टेज को सामने रखते हैं। निरन्तर देही अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते हैं उतना हम अपने याद के चार्ट को बढ़ा सकते हैं। हम सब बाबा की सेवा पर हैं, बाबा के साथ सेवा है। इसलिए ऐसे नहीं कि मुझे योग का बहुत इन्ट्रेस्ट है मैं सेवा छोड़कर साइलेन्स में बैठ जाऊं.. ऐसे कोई हमें 8 घण्टे का चार्ट नहीं बनाना है। अगर मैं सोचूं - कि मैं जाकर 2 घण्टा योग करूँ, मुझे 10 काम पड़े हैं, अगर मैं 2 घण्टा योग में बैठ जाऊं तो मेरे 10 काम कौन करेगा! यह बाबा की ड्युटी है। मैं बोल रही हूँ, लिख रही हूँ, लिखा रही हूँ। यज्ञ की देख-रेख कर रही हूँ.. बाबा के यज्ञ में कोई चीज वेस्ट न हो, तो क्या इन सब सेवाओं में मुझे बाबा भूला हुआ है? क्या मैं विस्मृत हूँ। भल मैं बैठी आप लोगों के साथ हूँ- मुझे याद बाबा है, क्योंकि यह बाबा का बगीचा है, आप सब बाबा के फूल हो। आपने बाबा को जीवन दी है, बाबा के घर जाना है, बाबा से राजाई लेनी है। तो बाबा याद है। यही मेरा योग है। ऐसे आप सेवा करते, बाबा को साथी बनाकर रखो तो याद का चार्ट बहुत अच्छा रहेगा। लेकिन जब भी सेवा से समय

मिलता तो स्वीट साइलेन्स का मजा भी जरूर लो। हम बाबा के बच्चे एक या दो घड़ी याद में क्यों देवे, हमारी हर घड़ी बाबा है। मेरा सूक्ष्म यह पुरुषार्थ रहता- रात को जागती हूँ, आधा-पौना घण्टा भी मैं उसी स्वीट साइलेन्स में खो जाती। मैं स्नान पर जाती, सोती, खाती.. अनेक बार कछुए की तरह सूक्ष्म संकल्पों को भी समेट अशरीरी हो जाती हूँ। ऐसा सारे दिन में अनेक बार पुरुषार्थ होता। इसका मतलब यह नहीं सर्विस में बिजी हूँ तो याद का पुरुषार्थ छूटा हुआ है। सदा बाबा साथ है। दोनो का बैलेन्स रहता। आप सबको कई प्रकार के उल्टे सुल्टे संकल्प विकल्प आ जाते, लेकिन मैं इसका पूरा ध्यान रखती। मुझे कभी कोई विकल्प चलते ही नहीं। मेरी बुद्धि इन सबसे बहुत-बहुत डिटैच है। इसलिए मैं अपनी एनर्जी किसी बात से भी वेस्ट नहीं करती। इसलिए एनर्जी जमा होती जाती। फालतू बातें सोचना, विचारना, तेरा-मेरा.. यही सब बातें योग में विघ्न रूप है। अगर अपने योग के चार्ट को ठीक रखना है तो बुद्धि में रहे न तेरा न मेरा.. मैं एक तेरा। इससे आप बहुत खुशी में रहेंगे, अन्दर डांस करते रहेंगे। बाबा मिला सब मिला, तू मिला जहान मिला।

प्रश्न:- जब योग में बैठते हैं तो कई बार सेवा के संकल्प आ जाते, क्या यह रांग है?

उत्तर:- नहीं। सेवा के संकल्प आना कोई बुराई नहीं है। कोई काम छोड़करके बैठेंगे तो सूक्ष्म में आयेगा यह काम जरूरी था। कभी आयेगा कभी नहीं भी आयेगा। क्योंकि हमें बाबा और सेवा दोनों का बैलेन्स रखना है। सेवा करते भी मेरे नयनों में बाबा है, बाबा के नयनों में मैं हूँ। यह अभ्यास हो। याद में जहाँ तक हो सके सब संकल्पों को समेट कर बैठना है।

प्रश्न:- बाबा कहते - देखते हुए भी न देखो- इस युक्ति को हम कैसे अपनायें?

उत्तर:- लौकिक में कहा जाता फलाना इस कुल का है, इस जाति का है, वह ऐसा है, वैसा है.. यह तो किसी काम का नहीं है.. यह सब है देखना। बाबा कहते आप देखते भी नहीं देखो- हम सबका एक ही इश्वरीय परिवार है, कई बार हम इस परिवार में भी देखने लगते- फलानी बहन ऐसी है, फलाना भाई ऐसा है, इसमें यह अवगुण है, यह ऐसे करता है। बाबा कहते उसे देखते भी नहीं देखो। जो उसमें गुण हैं उनको देखो। अपनी बुद्धि को हमेशा ओ.के. रखो। हर बात में ओ.के. कहना है, क्यों नहीं। अपने आपको मोल्ड करना है। अच्छा - ओम् शान्ति।